International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-1 January – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों के सामाजिक परिपक्वता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नीलम यादव

दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

सामाजिक परिवेश के साथ किशोरों की अंतःक्रिया दोहराई जाने वाली प्रतीत हो सकती है। इस कार्य के लिए एक किशोर को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो मुख्य रूप से व्यक्तिगत और पर्यावरणीय दोनों कारकों से उत्पन्न होती हैं। सामान्य काया वाला एक स्वस्थ किशोर आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान की भावना विकसित करता है; दूसरी ओर, बीमारी से पीड़ित या खराब स्वास्थ्य या किसी भी शारीरिक विकृ ति से पीड़ित व्यक्ति में हीनता की भावना विकसित होती है और सामाजिक समायोजन में अलग तरह से महसूस होता है। सामाजिक व्यवस्था के बिना उनके अस्तित्व की शायद ही कल्पना की जा सकती है। वह एक समाज में पैदा होता है, एक समाज में विकसित होता है और एक समाज में काम करता है और आगे बढ़ता है। किसी व्यक्ति की सामाजिक परिपक्वता के पीछे कई कारक होते हैं। माता–पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोसी, सहकर्मी समूह, समाज आदि उससे समाज को स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षा करते हैं। शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।

मुख्य शब्द: *उच्च शिक्षा*, किशोर

परिचय

एक किशोर व्यक्तित्व रचनात्मक या प्रतिकूल रूप से उन लोगों द्वारा अपनी व्यक्तिगत क्षमता पर प्रभाव से प्रभावित होता है जिनसे वह घिरा हुआ है। सामाजिक परिवेश के साथ किशोरों की अंतःक्रिया दोहराई जाने वाली प्रतीत हो सकती है। इस कार्य के लिए एक किशोर को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो मुख्य रूप से व्यक्तिगत और पर्यावरणीय दोनों कारकों से उत्पन्न होती हैं। सामान्य काया वाला एक स्वस्थ किशोर आत्मविश्वास और आत्म–सम्मान की भावना विकसित करता है; दूसरी ओर, बीमारी से पीड़ित या खराब स्वास्थ्य या किसी भी शारीरिक विकृति से पीड़ित व्यक्ति में हीनता की भावना विकसित होती है और सामाजिक समायोजन में अलग तरह से महसूस होता है। भावनात्मक समायोजन सामाजिक परिपक्वता के बहुत महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। किशोरों को उन समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो पर्यावरणीय कारकों जैसे स्कूल वातावरण, पारिवारिक वातावरण, सहकर्मी समूह संबंध और गिरोह प्रभाव आदि के कारण होती हैं। किसी के परिवार, स्कूल और गरीब सहकर्मी समूह संबंधों के अस्वस्थ वातावरण ने

सामाजिक पर बुरा प्रभाव डाला है। किशोरों का व्यवहार। किशोरावस्था में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन एक परिवार में किशोरों का स्थान और अपने माता–पिता के साथ उसकी प्रतिष्ठा है। उन्हें कुछ सामाजिक जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी। वह वयस्कों के साथ अपनी पहचान बनाने लगता है और एक वयस्क की भूमिकाएँ निभाने की कोशिश करता है। विपरीत लिंग के सदस्यों के साथ उसके संबंधों में सबसे उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण विकास दिखाई देता है। बचपन में लड़के लड़कों के साथ खेलते हैं और लड़कियां लड़कियों के साथ। जबकि किशोरावस्था में साहचर्य में विषमलैंगिक प्रवृत्ति होती है। किशोर लड़के और लड़कियां अपनी समान रुचि और लक्ष्यों के आधार पर एक समूह बनाते हैं। सामाजिक परिपक्वता की ओर प्रगति में लगातार बदलते चरणों के माध्यम से बच्चे के सामाजिक अनुकूलन धीरे–धीरे प्राप्त होते हैं।

सामाजिक परिपक्वता का अर्थ

सामाजिक परिपक्वता एक व्यक्ति की व्यक्तिगत, पारस्परिक और सामाजिक पर्याप्तता के लिए उपयुक्त दृ ष्टिकोण की प्रक्रिया है जो समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए आवश्यक है। हरलॉक का कहना है कि एक सामाजिक रूप से परिपक्व व्यक्ति इतना अधिक अनुरूप नहीं होता है क्योंकि वह व्यवहार के मौजूदा पैटर्न को स्वीकार करता है या दूसरों के डर के कारण यह महसूस करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छाओं को पूरी तरह से समूह द्वारा अनुमोदित पैटर्न में फिट करने के लिए तैयार होना चाहिए।

पढ़ाई का महत्व

मनुष्य मूल रूप से एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक व्यवस्था के बिना उनके अस्तित्व की शायद ही कल्पना की जा सकती है। वह एक समाज में पैदा होता है, एक समाज में विकसित होता है और एक समाज में काम करता है और आगे बढ़ता है। किसी व्यक्ति की सामाजिक परिपक्वता के पीछे कई कारक होते हैं। माता–पिता, परिवार के सदस्य, पड़ोसी, सहकर्मी समूह, समाज आदि उससे समाज को स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षा करते हैं। किशोरों से जिस समाज में वे रहते हैं उससे अधिक अपेक्षा की जाती है। सामान्य मनुष्य की आयु बढ़ने के साथ–साथ सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है। वे एक समूह में रहना सीखते हैं, साझा करते हैं और दूसरों की देखभाल करते हैं, समाज के मानदंडों और मूल्यों का सम्मान करते हैं। वर्तमान पाठ्यक्रम में ऐसे गुणों को विकसित करने की पर्याप्त गुंजाइश नहीं है। यह केवल अनुभूति–उन्मुख है। इसलिए बच्चे अपने बड़ों, परिवार के सदस्यों और पड़ोस आदि के साथ ठीक से व्यवहार करना नहीं जानते हैं। सच्ची शिक्षा काफी हद तक अनंत शक्तियों वाले शिक्षार्थियों के दिमाग पर निर्भर करती है। आजकल शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बन गया है जो बदले में व्यवहारिक परिपक्वता के बिना उच्च पदों की ओर ले जाता है। चूंकि किशोरावस्था एक व्यक्ति के लिए परिपक्व व्यवहार व्यक्त करने की उम्र है, शिक्षा को सामान्य पाठ्यक्रम के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से महान मानवीय मूल्यों को विकसित करना चाहिए। अन्वेषक उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध जानने में रुचि रखता है। शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक परिपक्वता दोनों समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन का महत्व अधिक है।

उद्देश्यों

लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।

- शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।
- लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।
- शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर का पता लगाना।

नमूना

जांचकर्ता ने यादृच्छिक रूप से 80 उच्चतर माध्यमिक छात्रों का चयन किया है, जिनमें से 40 लड़के हैं और 40 लड़कियां हैं, जो वर्तमान अध्ययन के लिए तिरुनेलवेली जिले के बारह अलग–अलग स्कूलों में पढ़ रहे हैं। उपयोग की जाने वाली नमूना तकनीक यादृच्छिक नमूनाकरण विधि है।

उपकरणों का इस्तेमाल

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि अपनाई जाती है। अन्वेषक ने नलिनी राव (1971) द्वारा मानकीकृत उपकरण अर्थात् श्सामाजिक परिपक्वता पैमानाश अपनाया। लेखक ने उपकरण की वैधता और विश्वसनीयता स्थापित की है। उपकरण की विश्वसनीयता 0-79 थी और सामाजिक परिपक्वता पैमाने की वैधता सामाजिक परिपक्वता की विशेषताओं पर शिक्षक रेटिंग पर आधारित थी। वर्तमान अध्ययन के लिए उपकरण को भारतीय स्थिति के अनुसार अपनाया गया है। उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता को मापने के लिए अन्वेषक ने मानकीकृत उपकरण लिया है। प्रश्नों के उत्तर पूर्णतः सहमत, सहमत, असहमत, पूर्णतया असहमत – 5 बिन्दु पैमाने को चुनकर दिए जाने हैं। शैक्षिक उपलब्धि उपकरण स्कूलों के विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया गया था। विषय के विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा उपकरण का चेहरा और सामग्री वैधता से गुजरा है। अन्वेषक ने सभी विषय अंक लिए और पाया कि प्रत्येक छात्र ने कुल अंक अर्जित किए हैं। अध्ययन के लिए कला समूह के छात्रों और विज्ञान समूह के छात्रों के अंक लिए गए।

आंकड़ा संग्रहण

स्व–डिज़ाइन किए गए टूल के अनुवादित संस्करण का उपयोग 45 मिनट की अवधि के भीतर छात्रों से डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था और जांचकर्ता ने स्वयं उचित निर्देश देकर चयनित स्कूलों में परीक्षण किया था।

डेटा का विश्लेषण और विवेचन

एकत्रित डेटा के विश्लेषण के लिए SPSS प्रोग्राम का उपयोग किया गया था। समूह के प्रत्येक जोड़े के साधनों के बीच महत्व अंतर की गणना मानक विचलन, श्टीश परीक्षण और कार्ल पियर्सन के गुणांक सहसंबंध का उपयोग करके की जाती है।

पृष्ठभूमि चर के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का स्तर

पृष्ठभूमि चर		कम	संतुलित	उच्च
लिंग	लड़के	16.3	72.5	11.3
	लड़कियाँ	7.5	81.9	10.6
स्कूल का इलाका	शहरी	14.4	73.8	11.9
	ग्रामीण	9.4	80.6	10.0

पृष्ठभूमि चर के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर

पृष्ठभूमि चर		कम	संतुलित	उच्च
लिंग	लड़के	23.1	65.6	11.3
	लड़कियाँ	20.0	58.1	21.9
स्कूल का इलाका	शहरी	21.3	64.4	14.4
	ग्रामीण	21.9	59.4	18.8

लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अंतर

लिंग	एन	अर्थ	एस.डी.	डीएफ	'टी' मान	टिप्पणी
पुरुष	40	80.5	24.52	318	2.25	S
महिला	40	70.6	21.53			

(5% महत्व के स्तर पर 't' का तालिका मान 1.96 है)

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि परिकलित श्जश मान 2-25, महत्व के 5% स्तर पर तालिका मान 1-96 से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

1. शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण अंतर

इलाका	एन	अर्थ	एस. डी.	डीएफ	'टी' मान	टिप्पणी
शहरी	40	35.1	25.48	318	1.35	NS
ग्रामीण	40	39.1	20.64			

(5% महत्व के स्तर पर 't' का तालिका मान 1.96 है)

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि परिकलित श्जश मान 1-35, महत्व के 5% स्तर पर तालिका मान 1-96 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर

लिंग	एन	अर्थ	एस. डी.	डीएफ	श्टीश मान	टिप्पणी
पुरुष	40	51.5	18.41	318	2.16	S
महिला	40	55.4	21.20			

(5% महत्व के स्तर पर 't' का तालिका मान 1.96 है)

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया जाता है कि परिकलित श्जश मान 2.16, महत्व के 5% स्तर पर तालिका मान 1.96 से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

शहरी और ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर

इलाका	एन	अर्थ	एस. डी.	डीएफ	'टी' मान	टिप्पणी
शहरी	40	53.1	19.37	318	0.22	NS
ग्रामीण	40	53.9	20.61			

(5% महत्व के स्तर पर 't' का तालिका मान 1.96 है)

उपरोक्त तालिका से यह अनुमान लगाया गया है कि परिकलित श्जश मान 0.22 महत्व के 5% स्तर पर तालिका मान 1.96 से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

जाँच – परिणाम

- लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच उनकी सामाजिक परिपक्वता में एक महत्वपूर्ण अंतर है।
- शहरी और ग्रामीण स्कूल के उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- लड़कों और लड़कियों के छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है।
- शहरी और ग्रामीण स्कूल उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- सेक्स के संदर्भ में उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
- विद्यालय की स्थानीयता के संदर्भ में उच्च माध्यमिक छात्रों की सामाजिक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में सामाजिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी जाती है, यह सिद्ध होता है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ शीघ्र परिपक्वता प्राप्त करती हैं। समाज यह भी मांग करता है कि लड़कियों को लड़कों की तुलना में अधिक परिपक्व व्यवहार व्यक्त करना चाहिए। लड़कियों को ज्यादातर भूमिका सीखने का अभ्यास करने के लिए पाया जाता है जो उन्हें अपनी शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने में मदद करता है। 12वीं कक्षा के परिणामों में लड़कों और लड़कियों के बीच असमानता स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि लड़कियां अकादमिक गतिविधियों में लड़कों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं और प्रवेश परीक्षा में लड़के लड़कियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। निस्संदेह, यह तथ्य उपरोक्त कथन को पुष्ट करता है। यह पाया गया है कि शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्र सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व होते हैं। शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण छात्र समाज के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। ग्रामीण छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि भी बच्चे के लिए अधिक समाजीकरण प्रदान करती है। वे संयुक्त परिवार संस्कृति, अच्छे पड़ोस संबंधों और शांत और शांतिपूर्ण जीवन से दूर व्यस्त, व्यस्त शहरी जीवन से बहुत लाभ प्राप्त करते हैं।

अध्ययन से यह पाया गया कि उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक परिपक्वता के बीच कोई संबंध नहीं है। स्वाभाविक है कि जैसे–जैसे उम्र बढ़ती है, सामाजिक परिपक्वता भी बढ़ती जाती है। लेकिन किशोरावस्था के दौरान वे अपनी भूमिका को लेकर असमंजस में रहते हैं। माता–पिता और बुजुर्ग आमतौर पर अपने व्यक्तित्व के समग्र विकास के बजाय केवल अपने शैक्षणिक पक्ष पर जोर देते हैं। यह वह अवधि है जब उनका भविष्य अकादमिक उत्कृष्टता के माध्यम से निर्धारित किया जाता है। इसलिए, सामाजिक प्रदर्शन की कीमत पर अकादमिक प्रदर्शन पर अधिक जोर दिया जाता है।

निष्कर्ष

लगभग सभी आयोग और समितियाँ पाठ्यचर्या और सह–पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षार्थियों के बीच सामाजिक परिपक्वता विकसित करने की आवश्यकता के पक्ष में हैं। भारतीय शिक्षा आयोग (1966) और राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (1986) ने किशोरों के साथ–साथ किशोरावस्था के चरण से परे व्यक्तित्व के विकास की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। शिक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम आयोजित करें ताकि शिक्षार्थी न केवल सामाजिक परिपक्वता प्राप्त कर सकें बल्कि व्यक्तित्व का एकीकृत विकास भी प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, सार्वजनिक रूप से, जिनकी सामाजिक स्थिति उच्च है, उन्हें अपने अनुभव साझा करने और अपने शिक्षार्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। वाद–विवाद, प्रश्नोत्तरी और भाषण आदि जैसी प्रतियोगिताओं का उद्देश्य शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का विकास करना है।

संदर्भ

[1] बेस्ट डब्ल्यू. जॉन और कान वी. जेम्स (1999), रिसर्च इन एजुकेशन, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली।
[2] अग्रवाल जे.सी. (1999), थॉट्स ऑन एजुकेशन, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
[3] गुप्ता सीबी और विजय गुप्ता (1998), एन इंट्रोडक्शन टू स्टैटिस्टिकल मेथड्स, 21वां संस्करण, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली।
[4] हरलॉक बी एलिजाबेथ (1967), किशोर विकास मैक ग्रा हिल, न्यूयॉर्क।
[5] मासेन कांगर कगन (1969), बाल विकास और व्यक्तित्व, हसपे एंड रो, पब्लिशिंग न्यूयॉर्क, इवास्टन और लंदन।
[6] जोम्बार्डो ए. फिलिप (1988), साइकोलॉजी एंड लाइफ, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी, 12वां संस्करण स्कॉट, फोरसमैन एंड कंपनी लंदन।
[7] रॉबर्ट ए. बेसन और डॉन बर्न (1995), सोशल साइकोलॉजी 7वां संस्करण, प्रेंटिस–हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
[8] कोठारी सी.आर (2007), रिसर्च मेथडोलॉजी–मेथड्स एंड टेक्निक्स, न्यू एज इंटरनेशनल प्रा। लिमिटेड, नई दिल्ली।